ग़ज़ल 21

-रविशंकर श्रीवास्तव

कुछ नहीं तो वायदों की बौछार लाऊँगा
इस चुनाव में जीता तो त्यौहार लाऊँगा ।

अभी तो याचक बना हूँ तेरे दर पर
कुर्सी पे बैठ तेरे लिए इन्तेजार लाऊँगा ।

परोसा है सभी को आश्वासनों के प्याले
होगी जेब गर्म तभी ऐतबार लाऊँगा ।

अभी तो होगा वो तुम चाहते हो जो
बाद में फिर मैं झूठा इक़रार लाऊँगा ।

लगते हो आज तुम मेरे अपने से
कल को पहचानने से इनकार लाऊँगा ।

जब बीतेंगे पांच बरस खामोशी से रवि
चीखता हुआ फिर सच्चा इसरार लाऊँगा ।

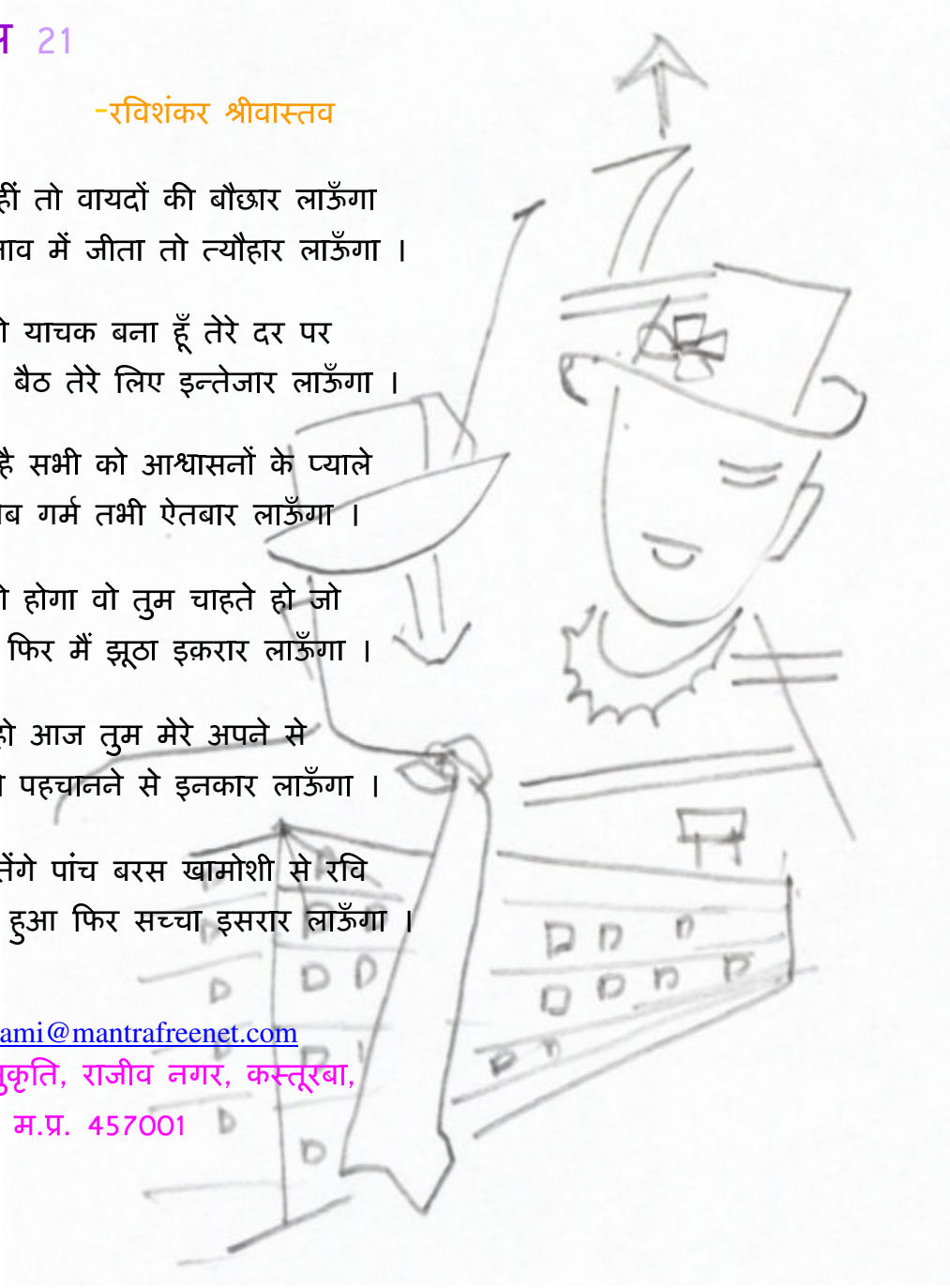

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001